कृषि निर्यात लाभ

भारतीय निर्यात-आयात बैंक
Visit us at www.eximbankagro.in

मार्च 2016
खंड XX अंक II

अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, असमी, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, तमिल और तेलुगु में प्रकाशित

अ नु क्र म णि का

विश्व जल दिवस 1–2

गेहूं की वैश्विक संभावनाएं 2–4

वैश्विक पशु चारा उद्योग 4–5

भारतीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग 6–8

भारतीय चाय की निर्यात संभाव्यतां 8–10

तिलहन फसलें : प्रमुख नीतिगत बदलाव 10–11

मुख्य समाचार 12

विश्व जल दिवस

मीठे जल की महत्ता की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करने और जल संसाधनों के दीर्घकालीन प्रबंधन के महत्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से हर वर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है. संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1993 में पहली बार विश्व जल दिवस का आयोजन कर इसकी शुरुआत की.

जल राष्ट्रीय तथा स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का एक अनिवार्य घटक है और अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में रोजगार सृजन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है. आधी से अधिक वैश्विक श्रमशक्ति कृषि, वानिकी, मत्स्यपालन, ऊर्जा, विनिर्माण, री-साइकलिंग, भवन एवं परिवहन जैसे जन-गहन उद्योगों में लगी है.

जल के समुचित प्रबंधन से तात्पर्य है जल की सुरक्षित, भरोसेमंद तथा सस्ती आपूर्ति सुनिश्चित करते हुए इसका संरक्षण व पर्याप्त सैनीटेशन प्रणाली सुनिश्चित करना. इससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है, स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को विस्तार मिलता है और रोजगार सृजन तथा सामाजिक समावेशन के उद्देश्यों की पूर्ति होती है. दीर्घकालीन जल प्रबंधन पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास का एक अनिवार्य अंग भी है.

इसके विपरीत, जल से संबंधित मुद्दों की अवहेलना के भयंकर परिणाम होते हैं. अर्थव्यवस्था, आजीविका तथा जनसंख्या पर इसका गंभीर और नकारात्मक प्रभाव पड़ता है. जल तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों का कुप्रबंधन अर्थव्यवस्था तथा समाज को भयंकर नुकसान पहुंचा सकता है और कई गरीबी उन्मूलन, रोजगारपरक तथा विकासपरक कार्यों को पटरी से उतार सकता है.

जल तथा नौकरियां

विश्व जल दिवस 2016 का थीम 'जल तथा नौकरियां' है. इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों को मुख्यत: तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है i) जल संसाधन प्रबंधन, पारिस्थितिकी पुनरुद्धार एवं पुन:स्थापन सहित एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन ; ii) जल संग्रहण स्रोतों का निर्माण, परिचालन तथा रखरखाव, और iii) जल आपूर्ति, साफ-सफाई तथा अपशिष्ट जल प्रबंधन सहित जल संबंधी सेवाओं की व्यवस्था. इससे कृषि (मछली पालन सहित), ऊर्जा तथा उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी विभिन्न प्रकार के रोजगार अवसरों का सृजन होता है. पेय जल तथा सैनीटेशन क्षेत्रों में निवेश आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा दे रहे हैं.

क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य

एक संसाधन के रूप में जल का महत्व विश्व के सभी क्षेत्रों में सर्वोपरि है. इसलिए जल संरक्षण और उसका सदुपयोग सभी देशों के लिए समान चिंता का विषय है. अफ्रीका महाद्वीप में नौकरियों की मांग प्रमुख नीतिगत मुद्दा है. महाद्वीप पहले से ही बेरोजगारी तथा न्यून रोजगार की समस्या से जूझ रहा है और इस वजह से महाद्वीप के भीतर तथा बाहर प्रवासन बढ़ रहा है. अफ्रीका को पिछले 10 वर्षों की अपनी प्रभावशाली वृद्धि को बनाए रखने के लिए जल तथा बिजली की आधारभूत ढांचागत जरूरतें पूरी करना अनिवार्य है.

अरब क्षेत्र में हाल के वर्षों में ग्रामीण आमदनी में गिरावट आई है. इसका प्रमुख कारण निम्न कृषि उत्पादकता, सूखे तथा भू-जल संसाधनों में कमी का होना रहा है. इसके चलते बेरोजगारी बढ़ी है, जिससे गांवों से शहरों की ओर पलायन, अनौपचारिक बस्तियों का विस्तार तथा सामाजिक अशांति भी बढ़ी है.

एशिया तथा प्रशांत क्षेत्र में आर्थिक वृद्धि में सबसे ज्यादा योगदान देने वाले अधिकांश उद्योग अपनी उत्पादन प्रक्रिया के एक बड़े हिस्से के लिए स्वच्छ जल पर निर्भर हैं. विस्तारशील अर्थव्यवस्थाओं को आने वाले समय में ज्यादा ऊर्जा की आवश्यकता होगी, जिसके लिए अधिक जल की भी जरूरत होगी. कृषि क्षेत्र में जल की उपलब्धता बढ़ाकर रोजगार सृजित करने की जोरदार संभावना है. उद्योग और सेवा क्षेत्र में भी जल से जुड़े रोजगारों की अच्छी संभावना है, खास तौर पर जल की उपलब्धता बढ़ाकर, प्रदूषण नियंत्रण और अपशिष्ट जल को दोबारा उपयोग में लाने योग्य बनाकर.

यूरोप तथा उत्तर अमेरिका में हाइड्रोपावर तथा नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्र में भी रोजगार की संभावनाएं हैं, जिन्हें अब तक भुनाया नहीं जा सका है. इसके अलावा जल संबंधी ढांचागत अवसंरचनाओं की मरम्मत, उनके आधुनिकीकरण तथा निर्माण जरूरतों से भी रोजगार के अवसर सृजित होंगे. लैटिन अमेरिका तथा कैरिबियाई क्षेत्र में, अर्थव्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों के दोहन पर निर्भर है, विशेषकर खनन, कृषि, जैव ईंधन, वानिकी, मत्स्यपालन तथा पर्यटन के लिए जल के उपयोग पर. विकास तथा रोजगार सृजन में जल का योगदान बढ़ाने के लिए नीति निर्माताओं को इस ओर ध्यान देना चाहिए. अनुमान है कि दुनियाभर में 80 प्रतिशत नौकरियां जल आपूर्ति तथा सैनीटेशन सहित जल से जुड़ी सेवाओं पर निर्भर हैं. इस प्रकार जल क्षेत्र में नौकरियां वैश्विक अर्थव्यवस्था के अधिकांश क्षेत्रों में रोजगार बनाए रखने के लिए अनुकूल वातावरण सृजित करती हैं. जल संसाधनों के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा और जलवायु परिवर्तन के बढ़ते कुप्रभाव के चलते जल की उपलब्धता बढ़ाने वाली रोजगार नीतियों का विकास महत्वपूर्ण हो गया है.

संदर्भ

- एफएओ

गेहूं की वैश्विक संभावनाएं

एफएओ के हालिया आकलन के अनुसार, वर्ष 2015 में गेहूं का वैश्विक उत्पादन वर्ष 2014 की तुलना में 0.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 735 मिलियन टन के स्तर पर पहुंचने का पूर्वानुमान है. उत्पादन में इस वृद्धि का श्रेय ऑस्ट्रेलिया, चीन, मोरक्का, तुर्की, यूक्रेन तथा अमेरिका में भारी पैदावार को जाता है. इस अवधि के दौरान गेहूं का व्यापार लगभग 6 मिलियन टन घटकर 150 मिलियन टन होने का अनुमान है.

उत्पादन

यूरोपीय संघ विश्व में गेहूं का अग्रणी उत्पादक है और वर्ष 2014 के दौरान कुल उत्पादन में इसका हिस्सा लगभग 21.4 प्रतिशत था. कुल उत्पादन में लगभग 17.2 प्रतिशत हिस्से के साथ चीन दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है. इसके बाद 13.1 प्रतिशत, 8.1 प्रतिशत, 7.5 प्रतिशत, 4.0 प्रतिशत और 3.5 प्रतिशत हिस्से के साथ क्रमश: भारत, रूस, अमेरिका, कनाडा तथा पाकिस्तान का स्थान रहा.

गेहूं के अग्रणी उत्पादक

	2013	2014 अनु.	2015 एफ	2014 की तुलना में 2015 में परिवर्तन
	मिलियन टन			(%)
यूरोपीय संघ	143.6	157	154.5	-1.6
चीन (मुख्यि भूमि)	121.9	126.2	129.9	2.9
भारत	93.5	95.9	88.9	-7.2
रूस	52.1	59.7	59.8	0.1
यूएसए	58.1	55.1	58.1	5.4
कनाडा	37.5	29.3	24.6	-15.9
पाकिस्तान	24.2	26.0	27.0	3.8
आस्ट्रेलिया	25.3	23.7	25.3	6.8
उक्रेन	22.3	24.1	25.8	7.0
तुर्की	22.1	19.0	22.5	18.4
विश्व	**715.6**	**732.9**	**734.8**	**0.3**

एफ -पूर्वानुमान
स्रोत: एफएओ

उत्तर अमेरिका में वर्ष 2015 के दौरान पैदावार बढ़ने से गेहूं उत्पादन में 5.4 फीसदी वृद्धि होने का अनुमान है. दूसरी ओर, कनाडा में इसी अवधि के दौरान गेहूं के उत्पादन में 15.9 प्रतिशत की गिरावट आने की आशंका है.

यूरोप में 2015 के दौरान उत्पादन मात्रा 2014 के स्तर से 0.3 प्रतिशत कम होने का अनुमान है और उत्पादन में गिरावट की वजह कम बुआई रकबा है. रूसी परिसंघ में फसल मौसम में प्रतिकूल शुरुआत के बावजूद उत्पादन 59.8 मिलियन टन होने का अनुमान है, जो 2014 के उत्पादन स्तर की तुलना में स्थिर है. पर्याप्त वर्षा के साथ हल्की ठंड पड़ने से पैदावार अधिक हुई, जबकि शरद ऋतु की बुआई में विस्तार से बसंत ऋतु की बुआई में कमी की क्षतिपूर्ति हो गई. यूक्रेन में गेहूं के उत्पादन में 7 प्रतिशत की वृद्धि होने का पूर्वानुमान है और यह 25.8 मिलियन टन अनुमानित है.

एशिया में 2015 में कुल उत्पादन लगभग 325 मिलियन टन अनुमानित है, जो पिछले वर्ष से थोड़ा अधिक है. अधिक बुआई रकबे तथा अच्छी फसल उपज के फलस्वरूप चीन की पैदावार लगभग 129.9 मिलियन टन रही जो 2014 से 2.9 प्रतिशत अधिक है. तथापि भारत में गेहूं की फसल उत्तरी तथा मध्य भारत स्थित राज्यों में प्रतिकूल मौसम से बुरी तरह से प्रभावित हुई है जिससे पैदावार में गिरावट आई है. फलस्वरूप उत्पादन 88.9 मिलियन टन अनुमानित है, जो 2014 के रिकॉर्ड स्तर से 7.2 प्रतिशत कम है. पाकिस्तान में 2015 के दौरान गेहूं का उत्पादन 27 मिलियन टन अनुमानित है जो 2014 की जोरदार पैदावार से 3.8 प्रतिशत अधिक है. इसकी मुख्य वजह गेहूं के बुआई रकबे में वृद्धि है.

उत्तर अफ्रीका में गेहूं का उत्पादन, जिसका अफ्रीका के कुल फसल उत्पादन में सर्वाधिक हिस्सा है, पिछले वर्ष की तुलना में बढा है. ट्यूनीशिया को छोड़कर अधिकांश देशों में अच्छी फसल के लिए अनुकूल मौसम दशाओं का योगदान रहा है. ट्यूनीशिया में बसंत में पड़े सूखे से फसल उत्पादन कमजोर रहा.

दक्षिणी गोलार्द्ध में ऑस्ट्रेलिया, एशिया तथा अमेरिका के हिस्सों में शुष्क मौसम दशाओं से ऐतिहासिक रूप से सम्बद्ध अल नीनो की मौजूदगी के बावजूद ऑस्ट्रेलिया में गेहूं का उत्पादन 25.3 मिलियन टन अनुमानित है जो पिछले वर्ष से 6.8 प्रतिशत अधिक है. यह अनुमानित वृद्धि अनुकूल वर्षा तथा अच्छी भू-आर्द्रता दशाओं को प्रतिबिम्बित करते हुए अच्छी पैदावार के अनुमान पर आधारित है जिससे पश्चिम ऑस्ट्रेलिया तथा न्यू साउथ वेल्स के मुख्य उत्पादक राज्यों में उत्पादन बढ़ने की आशा है. दक्षिण अमेरिका में वर्ष 2015 में गेहूं का कुल उत्पादन 2014 की तुलना में 8 फीसदी कम होने की आशंका है. यह मुख्यत: अर्जेंटीना में फसल की कमी को दर्शाता है जहां किसान गेहूं की गिरती कीमतों तथा बढ़ती उत्पादन लागत से परेशान थे. ब्राजील में अनुकूल फसल मौसम के चलते उत्पादन पूर्वानुमानों में कई सकारात्मक समायोजन किए गए. कम बुआई के बावजूद ब्राजील में गेहूं का उत्पादन 7.2 मिलियन टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचने का अनुमान है जो 2014 के दौरान बंपर फसल की तुलना में 17 प्रतिशत अधिक है.

व्यापार

निर्यात

पिछले मौसम के भारी मात्रा में भंडारण के चलते अर्जेंटीना द्वारा गेहूं के निर्यात में वृद्धि की आशा है. कनाडा में घरेलू उत्पादन में कमी के कारण निर्यात में 25 प्रतिशत तक कमी की संभावना है. इसी प्रकार घरेलू उत्पादन में कमी और काला सागर क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में आपूर्ति से बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के चलते वर्ष 2015 के दौरान यूरोपीय संघ से निर्यात में भी कमी की संभावना है. रिकॉर्ड फसल और कमजोर राष्ट्रीय मुद्रा के परिणामस्वरूप रूसी परिसंघ से निर्यात बढ़ने की संभावना है, तथापि निर्यात कर लगाने से संभावनाएं धूमिल हो सकती हैं. अन्य उद्यम स्रोतों से सस्ते गेहूं की आमद के साथ बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के कारण अमेरिका द्वारा भी गेहूं का निर्यात कम ही बढ़ने की संभावना है, जबकि वहां उत्पादन बढ़ा है.

आयात

वर्ष 2015 के दौरान एशिया में गेहूं की कुल खरीद लगभग 72 मिलियन टन होने की संभावना है, जो पिछले वर्ष से लगभग 4 मिलियन टन कम है. ईरान तथा तुर्की द्वारा आयात में क्रमश: 2.5 मिलियन टन तथा 2.4 मिलियन टन की गिरावट आने की संभावना है. अफगानिस्तान, चीन, पाकिस्तान तथा थाईलैंड द्वारा भी आयात में कमी होने की संभावना है. भारत में उच्च कोटि के मिलिंग गेहूं के उत्पादन में गिरावट के कारण गेहूं के आयात में लगभग 0.6 मिलियन टन वृद्धि होने की संभावना है, जो 2007-08 के बाद से सबसे ज्यादा आयात है.

दक्षिण कोरिया द्वारा अपने बढ़ते पशुधन क्षेत्र के लिए निम्न कोटि के गेहूं अधिक खरीदने की संभावना है. क्योंकि मक्के का आयात अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कम प्रतिस्पर्द्धी कीमतों के चलते पिछले वर्ष से अधिक जाने की संभावना नहीं है. सीरिया में उच्चतर घरेलू उत्पादन

के बावजूद आयात की जरूरतें लगातार बढ़ रही हैं। यहां आयात 1.7 मिलियन टन के स्तर पर पहुंच सकता है, जो पिछले मौसम से 350,000 टन अधिक है. इंडोनेशिया, इराक, जापान तथा फिलीपीन्स द्वारा भी ज्यादा आयात करने की संभावना है.

अफ्रीका में, 2015-16 की अवधि के दौरान कुल आयात घटकर 43 मिलियन टन होने का अनुमान है जो पिछले वर्ष से 730 हजार टन कम है. इसमें से अधिकांश गिरावट मोरक्को द्वारा गेहूं की खरीद में कमी से हुई है जहां 2014 में हुई रिकॉर्ड फसल के कारण गेहूं का आयात कम होने की आशा है. इसके विपरीत मिस्र द्वारा आयात इसी अवधि में बढ़कर 11.2 मिलियन टन हो जाने का अनुमान है. ट्यूनिशिया, जो अपनी घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए गेहूं के आयात पर अत्यधिक निर्भर है, औसत से कम फसल के कारण गेहूं का आयात बढ़ा सकता है.

यूरोप में गेहूं का कुल आयात 2014-15 की तुलना में थोड़ा अधिक यानी लगभग 8 मिलियन टन होने का अनुमान है. गेहूं के उत्पादन में गिरावट के बावजूद यूरापीय संघ के 2015 में भी लगभग उतना ही गेहूं खरीदने की संभावना है, जितना गत वर्ष खरीदा था. लैटिन अमेरिका तथा कैरेबियाई क्षेत्र में कुल आयात पिछले मौसम से थोड़ा अधिक होने का अनुमान है. वृद्धि में ब्राजील का सर्वाधिक हिस्सा रहेगा.

संदर्भ

- एफएओ

वैश्विक पशु चारा उद्योग

पशु चारा पूरे विश्व में सुरक्षित, प्रचुर तथा किफायती पशु प्रोटीन का सस्ता उत्पादन उपलब्ध कराते हुए वैश्विक खाद्य उद्योग में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है. विश्व जनसंख्या में वृद्धि, शहरीकरण तथा बढ़ती क्रय शक्ति के चलते वैश्विक चारा उद्योग भी मात्रात्मक और मूल्य दोनों तरह से लगातार बढ़ रहा है. पशु चारा उद्योग वर्ष 2014 के दौरान 460 बिलियन यूएस डॉलर का था. एलटेक ग्लोबल फीड सर्वे के अनुसार, वर्ष 2014 के दौरान पशु चारे का वैश्विक टनभार 980 मिलियन टन था, जिसमें गत वर्ष की तुलना में लगभग 2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है.

पशु चारे का वैश्विक उत्पादन

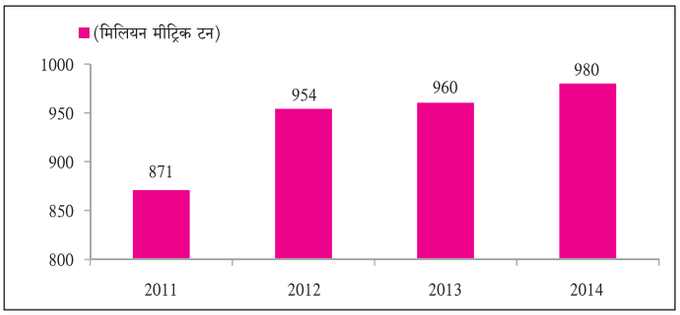

स्रोत : एलटेक ग्लोबल फीड सर्वे

वर्ष 2014 में एशिया लगभग 351 मिलियन टन उत्पादन के साथ अग्रणी पशु चारा उत्पादक क्षेत्र रहा, जिसका पशु चारा उत्पादन में 35.8 प्रतिशत हिस्सा रहा. इसी अवधि के दौरान वैश्विक चारा टनभार में यूरोप, उत्तर अमेरिका, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका तथा मध्य पूर्व का हिस्सा क्रमशः 23.7 प्रतिशत, 19.7 प्रतिशत, 14.8 प्रतिशत, 3.5 प्रतिशत तथा 2.5 प्रतिशत रहा.

क्षेत्रवार पशु चारा टनभार

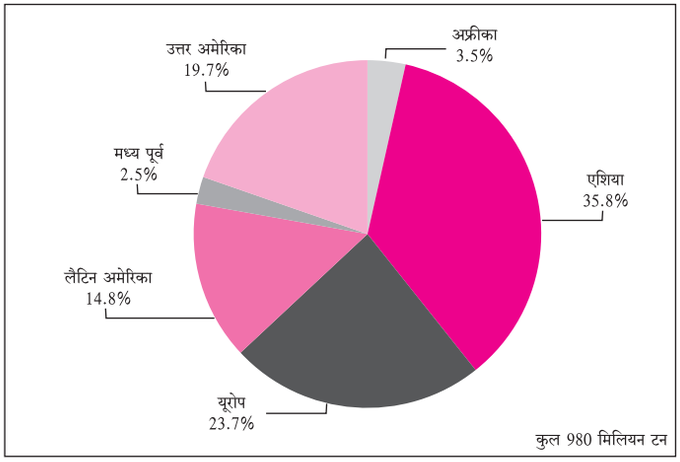

स्रोत :एलटेक ग्लोबल फीड सर्वे

चीन पशु चारे का अग्रणी उत्पादक देश है. वर्ष 2014 के दौरान यहाँ उत्पादन लगभग 182.7 मिलियन टन रहा जिसमें गत वर्ष की तुलना में लगभग 4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई. यूएसए तथा ब्राजील क्रमशः 172 मिलियन टन तथा 66 मिलियन टन पशु चारा उत्पादन के साथ दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रहे. भारत वैश्विक पशु चारा उत्पादन में 3.0 प्रतिशत हिस्से के साथ पांचवां सबसे बड़ा उत्पादक देश रहा.

विश्व में शीर्ष 10 पशु चारा उत्पादक देश

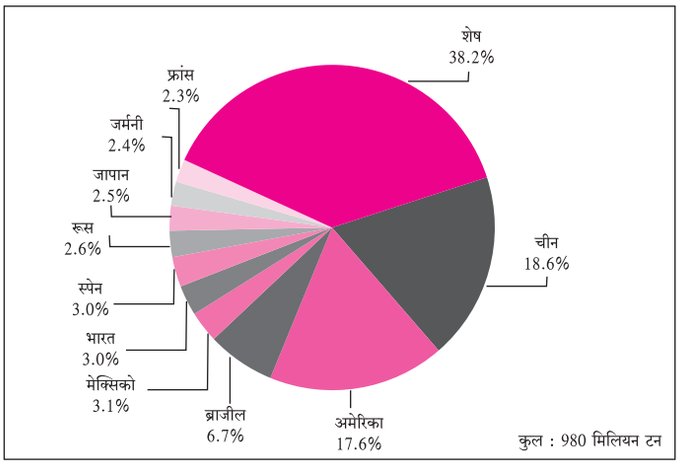

स्रोत : एलटेक ग्लोबल फीड सर्वे

व्यापार

पशुचारा उत्पादों के प्रमुख निर्यातक

पशु चारा उत्पादों का वैश्विक निर्यात 2010 से 2014 की अवधि के दौरान 8.9 प्रतिशत के सीएजीआर से बढ़ते हुए वर्ष 2014 में 27 बिलियन यूएस डॉलर के स्तर पर पहुंच गया. नीदरलैंड पशु चारे तथा संबन्धित उत्पादों का अग्रणी निर्यातक है और वैश्विक निर्यात में इसका हिस्सा वर्ष 2014 के दौरान 12 प्रतिशत रहा. इसी अवधि के दौरान अमेरिका द्वारा पशु चारा उत्पादों का निर्यात 2.8 बिलियन यूएस डॉलर रहा और इसने विश्व निर्यात के लगभग 10.6 प्रतिशत का निर्यात किया. पशु चारे के अन्य प्रमुख निर्यातक जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम तथा चीन हैं जिनका हिस्सा क्रमश: 10.0 प्रतिशत, 9.9 प्रतिशत, 6.6 प्रतिशत तथा 6.5 प्रतिशत रहा. पशु चारा उत्पादों के वैश्विक निर्यातकों में भारत 23वें स्थान पर रहा और वर्ष 2014 के दौरान विश्व निर्यात में इसका हिस्सा 0.7 प्रतिशत रहा.

पशु चारा उत्पादों के प्रमुख निर्यातक, 2014

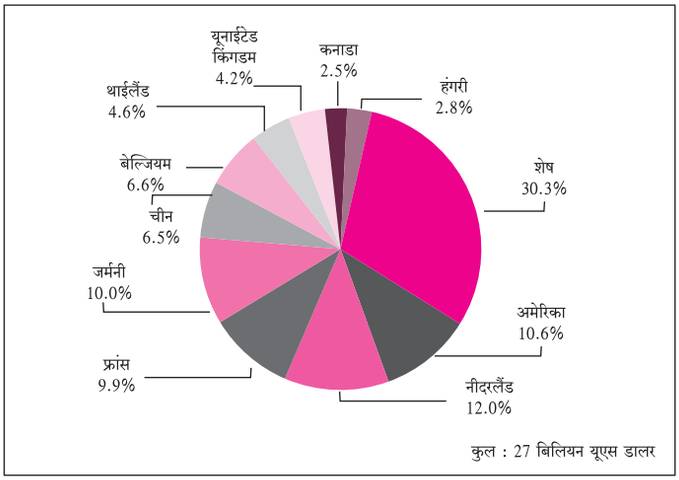

स्रोत: ट्रेडमैप, आईटीसी जेनेवा

पशु चारा उत्पादों के प्रमुख आयातक

वर्ष 2014 के दौरान पशु चारा उत्पादों का वैश्विक आयात 2010 से 2014 की अवधि के दौरान 8.4 प्रतिशत के सीएजीआर से बढ़ते हुए 26.7 बिलियन यूएस डॉलर के स्तर पर पहुंच जाने का अनुमान था. वर्ष 2014 के दौरान 2.1 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य के आयात के साथ पशु चारे के अग्रणी उत्पादक जर्मनी का कुल आयात में लगभग 7.7 प्रतिशत हिस्सा रहा. इसके बाद आयात में 5.5 प्रतिशत हिस्से के साथ यूके का दूसरा स्थान रहा. पशु चारा उत्पादों के अन्य महत्वपूर्ण आयातक अमेरिका, बेल्जियम, फ्रांस तथा जापान हैं जिनका हिस्सा क्रमश: 4.8 प्रतिशत, 4.6 प्रतिशत, 4.1 प्रतिशत तथा 4.1 प्रतिशत रहा. पशु चारा उत्पादों के वैश्विक आयातकों में भारत 22वें स्थान पर रहा और वर्ष 2014 के दौरान विश्व आयात में इसका हिस्सा मात्र लगभग 1 प्रतिशत रहा.

पशु चारा उत्पादों के प्रमुख आयातक, 2014

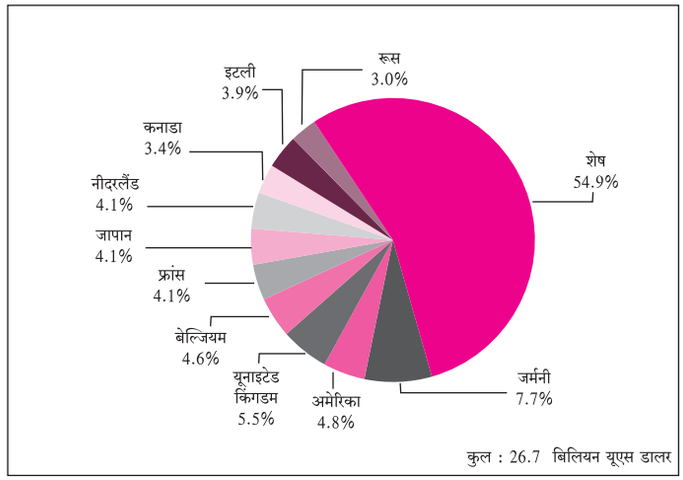

स्रोत: ट्रेडमैप, आईटीसी जेनेवा

संभावनाएं

पशुओं के पोषण और उच्च कोटि के पशु उत्पादों के लिए पशु चारा महत्वपूर्ण है. पशु चारे के उत्पाादन में वृद्धि मांस की खपत में वृद्धि पर निर्भर करती है. बढ़ती वैश्विक जनसंख्या के चलते प्रति व्यक्ति मांस की वैश्विक खपत भी बढ़ रही है. इस खपत को पूरा करने के लिए उत्पादन क्षमता तथा बाजार में आपूर्ति बढ़ानी होगी जिससे वैश्विक पशु चारा बाजार के भविष्य में बढ़ने की संभावना है.

संदर्भ

➢ एलटेक ग्लोबल फीड सर्वे

भारतीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में कृषि, बागवानी या पशु उत्पादों में किए गए हर तरह के मूल्ययोजन शामिल हैं. इनमें उत्पादों की छंटाई, ग्रेडिंग तथा पैकेजिंग जैसी प्रक्रियाएं भी शामिल हैं, जो खाद्य उत्पादों की शेल्फ लाइफ बढ़ाते हैं.

एफएओ के अनुसार वर्ष 2014 के दौरान भारत विश्व में गेहूं का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक रहा और वर्ष के दौरान उत्पादन की मात्रा 95.9 मिलियन टन अनुमानित थी. वर्ष के दौरान वैश्विक गेहूं उत्पादन में इसका हिस्सा लगभग 13 प्रतिशत अनुमानित था. भारत विश्व में मोटे अनाज का 5वां सबसे बड़ा उत्पादक देश है. इसका उत्पादन 42 मिलियन टन अनुमानित था, जिसका विश्व में मोटे अनाज के उत्पादन में 3.2 प्रतिशत हिस्सा रहा. चीन के बाद भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश है. वर्ष 2014 के दौरान उत्पादन मात्रा 104.8 मिलियन टन अनुमानित थी जो विश्व में कुल चावल उत्पादन का लगभग 21 प्रतिशत है.

भारत में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र जीडीपी में योगदान, रोजगार तथा निवेश की दृष्टि से अर्थव्यवस्था के एक महत्वपूर्ण खंड के रूप में उभरा है. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के अनुसार इस क्षेत्र में कृषि क्षेत्र से अधिक वृद्धि हुई है. 2012-13 को समाप्त 5 वर्ष की अवधि के दौरान खाद्य प्रसंस्करण उद्योग लगभग 8.4 प्रतिशत की दर से बढ़ा है, जबकि कृषि क्षेत्र में करीब 3.3 प्रतिशत और विनिर्माण में 6.6 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर (एएजीआर) दर्ज की गई. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग 2011 से 2015 की अवधि के दौरान 13 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ते हुए वर्ष 2015 के दौरान 1094 बिलियन रुपए अनुमानित था.

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग

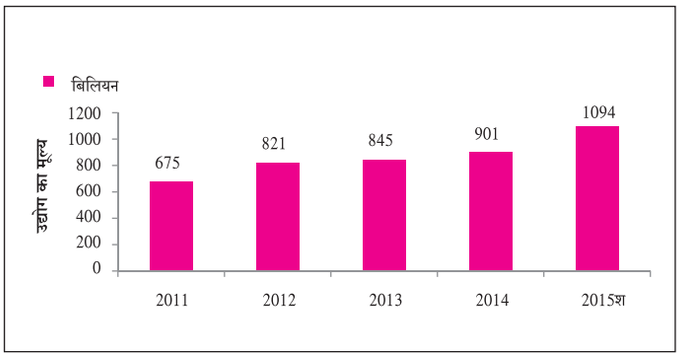

स्रोत : डी एंड बी रिसर्च

खंडवार निर्यात

मांस एवं मांस उत्पाद

भारत से प्रसंस्कृत मांस का निर्यात वर्ष 2014-15 में 2.29 मिलियन यूएस डॉलर अनुमानित था. हालांकि इन उत्पादों का निर्यात 2010-11 से 2014-15 की अवधि के दौरान 6.8 प्रतिशत की सीएजीआर से घटा है, 2014-15 में गत वर्ष की तुलना में 78 प्रतिशत की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि दर्ज की गई.

वियतनाम 2014-15 में लगभग 0.9 मिलियन यूएस डॉलर मूल्य के 38.1 प्रतिशत हिस्से के आयात के साथ भारत के प्रसंस्कृत मांस का प्रमुख आयातक था. प्रसंस्कृत मांस के अन्य महत्वपूर्ण आयातक सऊदी अरब (23.4 प्रतिशत), संयुक्त अरब अमीरात (20.5 प्रतिशत), थाईलैंड (10.4 प्रतिशत) और कोरिया (3.15 प्रतिशत) हैं.

भारत से मांस एवं मांस उत्पादों का निर्यात

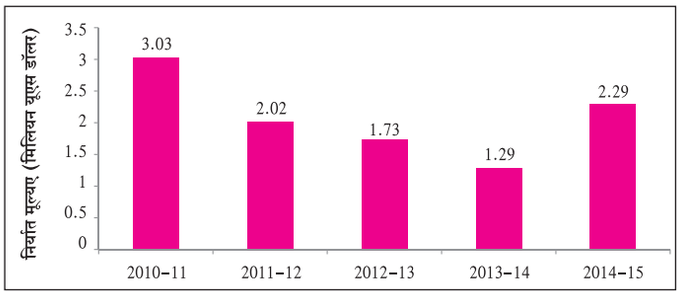

स्रोत : डीजीसीआईएस, एक्ज़िबम बैंक शोध

डेयरी उत्पाद

भारत से डेयरी उत्पादों का निर्यात वर्ष 2014-15 के दौरान 355.8 मिलियन यूएस डॉलर अनुमानित था. वर्ष 2014-15 के दौरान इन उत्पादों के निर्यात में भारी गिरावट दर्ज की गई. जबकि डेयरी उत्पादों का निर्यात 2010-11 से 2014-15 की अवधि के दौरान 7.4 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ा था.

अमेरिका भारत से डेयरी उत्पादों का अग्रणी आयातक है और वैश्विक आयात में इसका हिस्सा वर्ष 2014-15 के दौरान लगभग 30.8 प्रतिशत रहा. भारत से डेयरी उत्पादों के अन्य प्रमुख आयातक बांग्लादेश (10.6 प्रतिशत), यूएई (9.5 प्रतिशत), पाकिस्तान (8.1 प्रतिशत), तथा नेपाल (5.3 प्रतिशत) रहे.

भारत से डेयरी उत्पादों का निर्यात

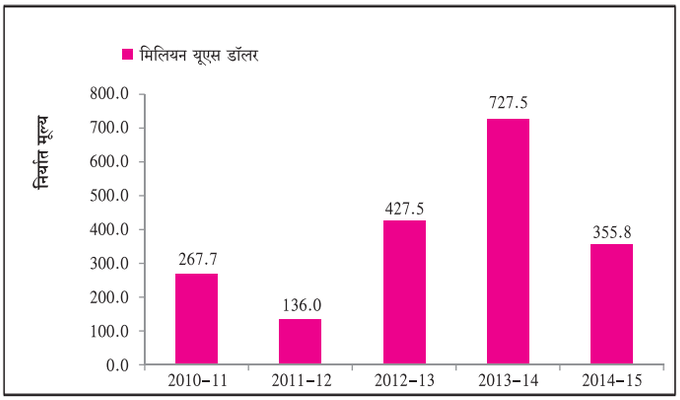

स्रोत : डीजीसीआईएस, एक्ज़िम बैंक शोध

समुद्री उत्पाद

भारत से समुद्री उत्पादों का निर्यात वर्ष 2014–15 के दौरान 5.5 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य का था जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 9.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है. निर्यात मूल्य 2010–11 के 2.6 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2014–15 में 5.5 बिलियन यूएस डॉलर होने के चलते समुद्री उत्पादों का निर्यात 20.4 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ा है.

1.5 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य के आयात के साथ अमेरिका भारत से समुद्री उत्पादों का अग्रणी आयातक है और वर्ष 2014–15 के दौरान विश्व से कुल आयात में इसका हिस्सा 26.5 प्रतिशत रहा. भारत से समुद्री उत्पादों के अन्य प्रमुख आयातक वियतनाम (20.1 प्रतिशत), जापान (8.1 प्रतिशत), स्पेन (3.7 प्रतिशत) तथा बेल्जियम (3.7 प्रतिशत) हैं.

पोल्ट्री उत्पाद

पोल्ट्री उत्पादों का निर्यात वर्ष 2014–15 के दौरान 106.4 मिलियन यूएस डॉलर अनुमानित रहा, जिसमें इसी अवधि के दौरान 14.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई. पोल्ट्री उत्पादों का निर्यात 11.4 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ते हुए 2010–11 के 69.1 मिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2014–15 में 106.4 मिलियन यूएस डॉलर हो गया. ओमान भारत से पोल्ट्री उत्पादों का अग्रणी आयातक है और कुल आयात में इसका हिस्सा 21.6 प्रतिशत रहा. इसके बाद जर्मनी, जापान, सऊदी अरब तथा इंडोनेशिया का स्थान रहा.

भारत से समुद्री उत्पादों का निर्यात

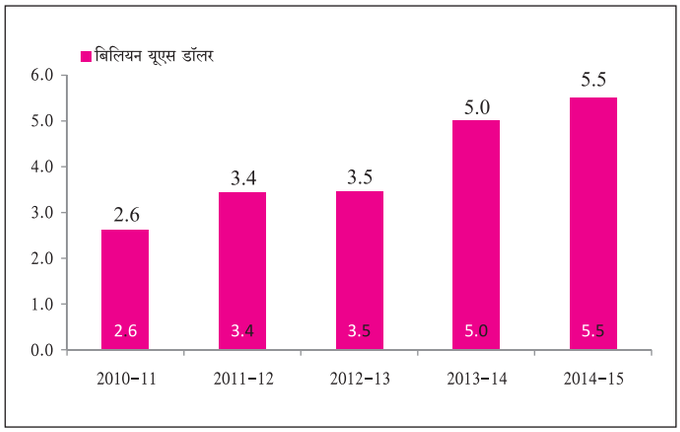

स्रोत : डीजीसीआईएस, एक्ज़िम बैंक शोध

खाद्य प्रसंस्करण में एफडीआई

भारत से पोल्ट्री उत्पादों का निर्यात

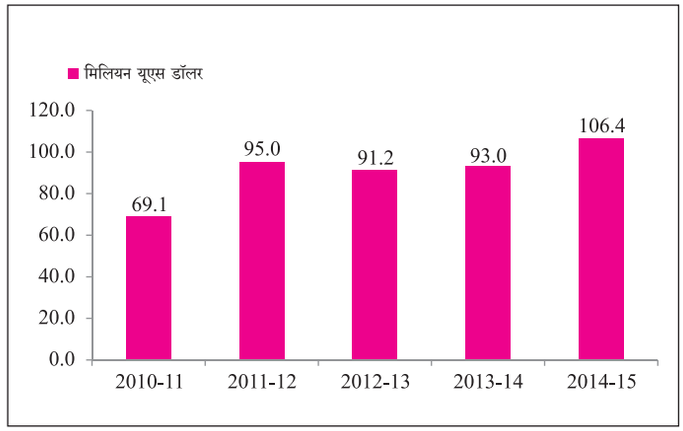

स्रोत : डीजीसीआईएस, एक्ज़िम बैंक शोध

औद्योगिक नीति एवं संवर्द्धन विभाग के अनुसार खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में अप्रैल 2000 से सितंबर 2015 तक एफडीआई इक्विटी अंतर्वाह लगभग 6.5 बिलियन यूएस डॉलर रहा जो कुल अंतर्वाह का 2.5 प्रतिशत है. एफडीआई आसूचना के अनुसार, जनवरी 2003 से जनवरी 2016 की अवधि के दौरान खाद्य एवं तम्बाकू क्षेत्र में कुल 287 एफडीआई परियोजनाएं मंजूर की गईं. ये परियोजनाएं कुल 9.54 बिलियन यूएस डॉलर के पूंजी निवेश का प्रतिनिधित्व करती हैं जो प्रति परियोजना 33.20 मिलियन यूएस डॉलर का औसत निवेश है.

संभावनाएं

प्रसंस्कृत खाद्य की खपत के स्वरूप में बदलाव तथा बढ़ती आय से विश्व में प्रसंस्कृत खाद्य की खपत बढ़ने और इस उद्योग को प्रोत्साहन मिलने की संभावना है. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग आपूर्ति श्रृंखला इंफ्रास्ट्रक्चर, कोल्ड स्टोरेज, सड़क विकास, पैकेजिंग जैसे अन्य उद्योगों से नजदीकी से जुड़ा है, जिनकी भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की सफलता तय करने में मुख्य भूमिका होती है. सरकार की राष्ट्रीय खाद्य मिशन योजना को कार्यान्वित करने में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के रणनीतिक महत्व को स्वीकार करते हुए यह उद्योग सरकार के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के लिए चुने गए 25 क्षेत्रों में से एक

है. इस प्रकार योजनाबद्ध ढंग से कार्यान्वित किए जाने पर एमओपीएफआई द्वारा उद्योग को प्रदान किए जाने वाले विभिन्न प्रोत्साहन तथा सब्सिडियां राष्ट्रीय खाद्य प्रसंस्कण नीति (एनएफपीपी) के अंतर्गत प्रसंस्करण लक्ष्य के स्तर को प्राप्त करने में सहायक होंगी. इसका लक्ष्य खाद्य प्रसंस्करण का स्तर 2010 के 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 2025 में 25 प्रतिशत तक ले जाना है. इसके अलावा प्रसंस्कृत खाद्य रिटेलिंग, बशर्ते उनका उत्पादन भारत में होता हो, में 100 प्रतिशत विदेशी निवेश की अनुमति देने की सरकारी नीति से मार्क्स एंड स्पेंसर्स, टेस्को तथा वालमार्ट जैसे ग्लोपबल रिटेलरों को भारत में फूड रिटेल आउटलेट स्थापित करने में सहायता मिलेगी.

संदर्भ

- खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय

भारतीय चाय की निर्यात संभाव्यता

चाय विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय और सस्ता पेय है. इसका उत्पादन मुख्यत: चीन, भारत, केन्या, श्रीलंका, तुर्की तथा वियतनाम में होता है. चाय उद्योग भारत में सबसे पुराने संगठित उद्योगो में से एक है जिसमें चाय उत्पादकों, रिटेलरों, वितरकों, नीलामीकर्ताओं, निर्यातकों तथा पैकरों का एक विशाल नेटवर्क है.

वैश्विक उत्पादन

वर्ष 2014 के दौरान चाय का वैश्विक उत्पादन लगभग 5 बिलियन किग्रा. रहा. वैश्विक उत्पादन में पिछले वर्ष की तुलना में 8.2 प्रतिशत की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि हुई है. कुल उत्पादन में लगभग 40 प्रतिशत हिस्से के साथ चीन विश्व में चाय का अग्रणी उत्पादक बना हुआ है. भारत चाय का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और उसके बाद केन्या तथा श्रीलंका का स्थान आता है.

विश्व में चाय के प्रमुख उत्पादक (2014)

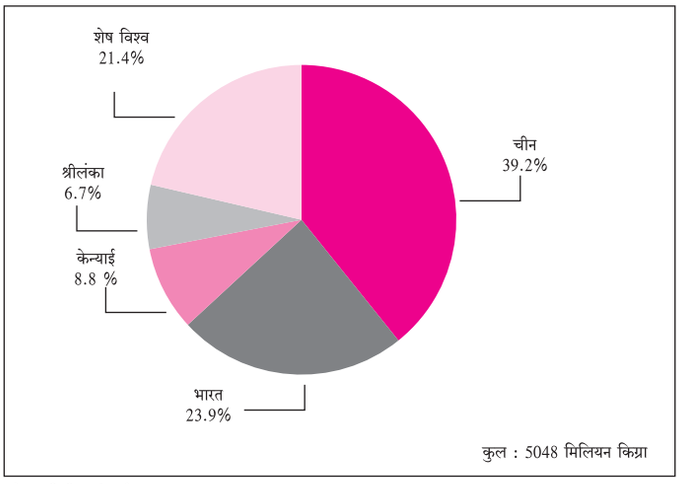

स्रोत : क्रिसिल रिसर्च

वैश्विक व्यापार

चाय का निर्यात मूल्य 2012 से 2014 की अवधि के दौरान 6.7 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 7.4 बिलियन यूएस डॉलर हो गया जो 2.9 प्रतिशत की सम्मिश्र वार्षिक संवृद्धि (सीएजीआर) प्रदर्शित करता है. श्रीलंका विश्व में चाय का सबसे बड़ा निर्यातक है और यह मुख्यत: रूस, तुर्की, ईरान तथा इराक को चाय का निर्यात करता है. चीन विश्व में चाय का अग्रणी उत्पादक तथा दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है. मोरक्को चीनी चाय का सबसे बड़ा आयातक है. उसके बाद हांगकांग तथा यूएसए का स्थान है. केन्या, भारत तथा यूएई भी क्रमश: 14.2 प्रतिशत, 8.9 प्रतिशत तथा 3.6 प्रतिशत हिस्से के साथ चाय के महत्वहपूर्ण निर्यातक हैं.

विश्व में चाय के प्रमुख निर्यातक

देश	2012	2013	2014	सीएसीआर
	मिलियन यूएस डॉलर			%
श्रीलंका	1403.2	1528.5	1609.3	7.1
चीन	1042.1	1246.3	1272.7	10.5
केन्या	उपलब्ध नहीं	1218.2	1047.0	उपलब्ध नहीं
भारत	685.5	816.1	656.2	-2.2
यूएई	366.6	414.8	268.0	-14.5
विश्व	**6945.3**	**7779.6**	**7359.9**	**2.9**

स्रोत : ट्रेडमैप, आईटीसी जिनेवा

चाय का वैश्विक आयात वर्ष 2014 के दौरान 6.7 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य का था. लगभग 9.7 प्रतिशत हिस्से के साथ रूस चाय का सबसे बड़ा आयातक है. यूएसए चाय का दूसरा सबसे बड़ा आयातक है. 2012 से 2014 की अवधि के दौरान आयात मूल्य में 3.6 प्रतिशत की गिरावट आई क्योंकि आयात मूल्य 414.2 मिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 444.5 मिलियन यूएस डॉलर हो गया. यूके, मिस्र तथा पाकिस्तान विश्व में चाय के अन्य प्रमुख आयातक हैं जिनका हिस्सा क्रमश: 5.6 प्रतिशत, 5.2 प्रतिशत तथा 4.9 प्रतिशत रहा.

विश्व में चाय के प्रमुख आयातक

देश	2012	2013	2014	सीएजीआर
	मिलियन यूएस डॉलर			%
रूस	650.2	657.1	645.8	-0.34
यूएसए	414.2	453.2	444.5	3.60
यूके	437.4	423.1	373.5	-7.59
मिस्र	330.5	307.3	344.8	2.14
पाकिस्तान	361.3	318.4	328.3	-4.68
विश्व	**6691.4**	**6949.3**	**6687.9**	**-0.03**

स्रोत : ट्रेडमैप, आईटीसी जिनेवा

भारत का उत्पादन

2014-15 के दौरान भारतीय चाय उत्पादन 1197.2 मिलियन किग्रा अनुमानित था किन्तु 2012-13 से 2014-15 की अवधि के दौरान उत्पादन में मात्र 2.7 प्रतिशत की सीएजीआर से वृद्धि के चलते इसमें 1 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई है. भारत में असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु तथा केरल प्रमुख चाय उत्पादक राज्य हैं. कुल उत्पादन में इनका 97 प्रतिशत हिस्सा है. अन्य, पारंपरिक राज्य जहां कम मात्रा में चाय का उत्पादन होता है, उनमें त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार तथा कर्नाटक शामिल हैं. हाल के वर्षों में अन्य गैर-पारंपरिक राज्य जहां चाय का उत्पादन प्रारंभ हुआ है उनमें अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड तथा सिक्किम शामिल हैं. भारत दार्जीलिंग, असम तथा नीलगिरी जैसे कुछ क्षेत्र विश्व की बेहतरीन किस्सों का उत्पादन करते हैं जो अपने फ्लेवर के लिए प्रसिद्ध हैं.

प्रमुख चाय उत्पादक क्षेत्रों असम तथा तमिलनाडु में वर्ष 2014-15 के दौरान मौसम अनुकूल न रहने से चाय का समग्र उत्पादन 2013-14 की तुलना में 11.60 मिलियन किग्रा कम हुआ जबकि पश्चिम बंगाल तथा केरल में चाय का उत्पादन बढ़ा है.

भारत में चाय का उत्पादन (मिलियन किग्रा)

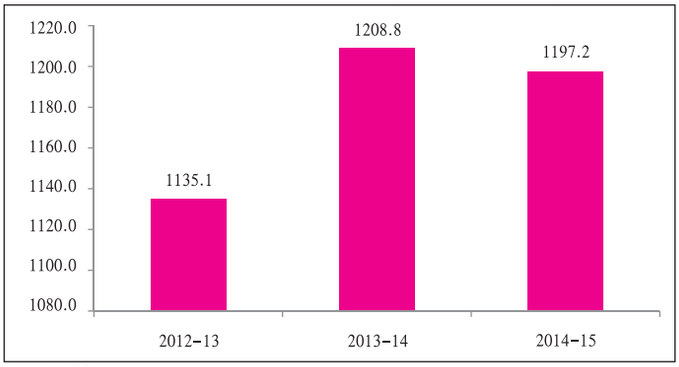

स्रोत : टी बोर्ड भारत

भारत से निर्यात

वर्ष 2014-15 के दौरान भारतीय चाय का निर्यात मूल्य 2013-14 की तुलना में 15 प्रतिशत की गिरावट दर्ज करते हुए 646.6 मिलियन यूएस डॉलर रहा. 2010-11 से 2014-15 की अवधि के दौरान निर्यात मूल्य 2.2 प्रतिशत की सीएजीआर की गिरावट दर्ज करते हुए 707.6 मिलियन यूएस डॉलर से घटकर 646.6 मिलियन यूएस डॉलर हो गया.

निर्यात तथा भारतीय चाय निर्यात की वृद्धि दर (मिलियन यूएस डॉलर)

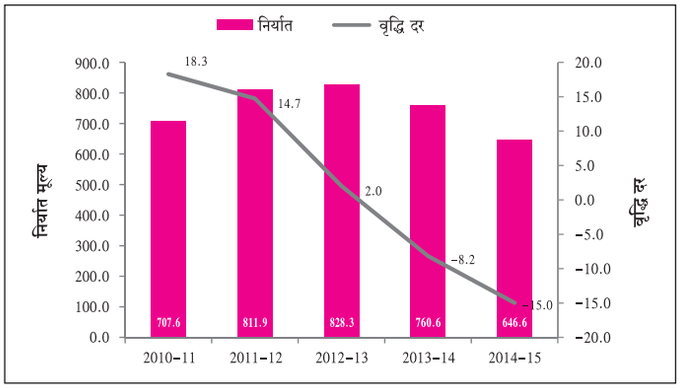

स्रोत : डीजीसीआईएस

रूस भारत से चाय का अग्रणी आयातक है जिसका कुल आयात में लगभग 15 प्रतिशत हिस्सा है. ईरान को भारतीय चाय के निर्यात का मूल्य वर्ष 2014-15 के दौरान 88.2 मिलियन यूएस डॉलर रहा जो कुल निर्यात का लगभग 13.6 प्रतिशत है. भारतीय चाय के अन्य महत्वपूर्ण निर्यात गंतव्य स्थानों में यूएसए, यूके, कजाकिस्तान, यूएई तथा जर्मनी शामिल हैं जिनका हिस्सा क्रमश: 9.1 प्रतिशत, 8.8 प्रतिशत, 8.4 प्रतिशत, 6.1 प्रतिशत तथा 5.3 प्रतिशत रहा. भारतीय चाय के निर्यात में हाल में गिरावट आई है जिसके कुछ कारणों में देर से वर्षा, केन्या से बढ़ी हुई आपूर्ति तथा यूएसए, ईरान एवं रूस जैसे उच्च मूल्य वाले बाजारों में मांग में गिरावट शामिल हैं.

भारतीय चाय के प्रमुख निर्यात स्थल

देश	2013-14	2014-15
	मिलियन यूएस डॉलर	
रूस	108.5	96.7
ईरान	100.3	88.2
यूएसए	61.5	58.6
यूके	57.6	56.7
कजाखस्तान	50.1	54.3
यूएई	75.1	39.5
जर्मनी	42.3	34.5
पाकिस्तान	30.0	19.7
जापान	19.6	18.8
ऑस्ट्रेलिया	20.4	18.4
कुल	**760.6**	**646.8**

स्रोत : ट्रेडमैप, आईटीसी जेनेवा

चुनिंदा रणनीतियां

भारत विश्व में चाय का एक प्रमुख उत्पादक तथा निर्यातक देश है तथा इसके निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारतीय चाय की बेहतर मार्केटिंग पर और जोर दिया जाना चाहिए. इसके अलावा, विश्व में गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में निर्यात को बढ़ावा देने के लिए चाय के स्वास्थ्य लाभों को प्रचारित करना भी आवश्यक है. इस संबंध में कुछ रणनीतियां निम्नलिखित हैं :

- अंतरराष्ट्रीय बाजारों में पहुँच बनाना
- गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना
- प्रभावी सूचना प्रणाली विकसित करना
- मूल्य योजित मदों का उत्पादन बढ़ाना
- मुख्य खंडों को लक्षित करना
- उपभोक्ता केन्द्रित मार्केटिंग प्रक्रिया अपनाना

संदर्भ

- टी बोर्ड भारत
- उद्योग स्रोत

तिलहन फसलें : प्रमुख नीतिगत बदलाव

देश	उत्पाद	कब से	नीति श्रेणी /बदलाव	विवरण
अल्जीरिया	सोयाबीन खली	जून 2015	आयात नीति	सोयाबीन खली सहित पशु चारों पर शून्य आयात शुल्क को 2015 के अंत तक बढ़ाया.
ब्राजील	कृषि योग्य फसलें	जून 2015	कृषि नीति	मार्केटिंग सहायता उपायों, मध्यम आकार के उत्पादकों को सहायता, कृषि उपकरण ऋण, भंडारण सुविधा विस्तार तथा फार्म बीमा योजनाओं पर फोकस करते हुए कृषि सहायता कार्यक्रमों के लिए निधीयन का नवीकरण किया तथा उसे बढ़ाया.
	सोयाबीन	जून से सितबर 2015	पादप स्वच्छता उपाय	रोगों को फैलने से रोकने के लिए अनिवार्य सोयाबीन मुक्त अवधियों पर नीति को विस्तारित किया.
कनाडा	सोयाबीन	अप्रैल 2015	पोषण नीति	कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए प्रोटीन प्रचुर सोया खाद्य उत्पादों संबंधी स्वास्थ्य के दावों के प्रयोग का अनुमोदन किया.
	तुरिया	जून 15	पर्यावरण नीति	मधुमक्खियों के लिए विषाक्त नियोनीकॉटिनायड आधारित कीटनाशकों के प्रयोग को कम करने के लिए कानून लागू किए.
चीन	जीएम फसलें	सितंबर 2015	जीएमओ नीति	जीएम फसलों की अवैध खेती की जांच-पड़ताल की शुरुआत.
मिस्र	खाद्य तेल	जुलाई 2015	आयात नीति	ट्रांजैक्शन लागत कम करने के उद्देश्य से रसोई तेल तथा अन्य खाद्यों के आयात के लिए सार्वजनिक निविदाओं को सीधे आदेश करारों से प्रतिस्थापित किया.
इथियोपिया	खाद्य तेल	जुलाई 2015	आयात नीति	निजी क्षेत्र द्वारा खाद्य तेल आयात पर लगा प्रतिबंध हटाया.
यूरोपीय संघ	सोयाबीन	मई 2015	जीएमओ नीति	संघ के आंतरिक बाजारों में पशु / मानव उपभोग के लिए निर्दिष्ट छह नई जीएम सोयाबीन किस्मों के आयात का अनुमोदन किया.
	बायो-ईंधन	जुलाई 2015	नवीकरणीय ऊर्जा नीति	फसल आधारित / पहली पीढ़ी के बायो-ईंधनों के योगदान पर ऊपरी सीमा सहित परिवहन ईंधन के रूप में बायो-ईंधन के प्रयोग पर संशोधित यूरोपीय संघ नियम अपनाये.
	बायो-डीजल	सितंबर 2015	आयात नीति	यूएस बायो डीजल के आयात पर लगने वाले डंपिंग रोधी तथा सब्सिडी रोधी शुल्कों को पांच और वर्षों के लिए अर्थात सितंबर 2020 तक बढ़ाया.
भारत	खली	अप्रैल 2015	निर्यात नीति	खली के निर्यात के लिए उच्चतर समर्थन भुगतान सहित विशिष्ट पण्यों के निर्यात के लिए देश के प्रोत्साहन कार्यक्रम को 2015-2020 के लिए नई विदेश व्यापार नीति के अंतर्गत सरल एवं कारगर बनाया.
	कृष्य फसलें	जून 2015	उत्पादक सहायता	ऐसे किसानों के लिए डीजल, बिजली तथा बीजों पर सब्सिडी शुरू की जिनकी फसलें अपर्याप्त मानसूनी वर्षा से प्रभावित हुई हैं.
	तिलहन, पॉम ऑयल, जैतून का वृक्ष	अगस्त 2015	क्षेत्र विकास	अगले पांच वर्षों में देश को वनस्पनति तेल में आत्मनिर्भर बनाने के लिए उपाय शुरू किए, जिसमें नई तिलहन खरीद योजना तथा पॉम ऑयल और जैतून वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने संबंधी कार्यक्रम शामिल हैं.

	तेल/बसा	अगस्त 15	पोषण नीति	वनस्पनति वसा तथा हाइड्रेटेड वनस्पति तेलों में ट्रान्स फैटी ऐसिड के तत्व को अधिकतम 5 प्रतिशत (वजन से) तक सीमित किया.
	खाद्य तेल	सितबंर 2015	आयात नीति	सस्ते पॉम ऑयल के आयात में तेजी पर लगाम लगाने के लिए अपरिष्कृत तथा परिष्कृत दोनों खाद्य तेलों पर आयात शुल्क 5 प्रतिशत बिन्दु तक बढ़ाया.
इंडोनेशिया	पॉम ऑयल, बायोडीजल	जुलाई 2015	क्षेत्र विकास और नवीकरणीय ऊर्जा नीति	अपरिष्कृत तथा संसाधित पॉम ऑयल के निर्यात पर नया शुल्क लगाया, इससे प्राप्त राजस्व का उपयोग पॉम ऑयल आधारित बायोडीजल उत्पादन के संवर्द्धन सहित पॉम ऑयल क्षेत्र के विकास उपायों में किया जाएगा.
	पॉम ऑयल	जुलाई 2015	निर्यात कराधान	स्थानीय मुद्रा मूल्य प्रतिशत को यूएस डॉलर राशियों से प्रतिस्थापित करते हुए पॉम ऑयल पर देश के प्रगामी निर्यात कर की गणना के तरीके को संशोधित किया.
	पॉम ऑयल	अगस्त 2015	द्विपक्षीय सहयोग	आपूर्ति प्रबंधन, उत्पाद छवि, फार्म आय तथा तकनीकी सहायता के संबंध में सामान्य हितों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से पॉम ऑयल के क्षेत्र में नीतियों को समन्वित करने के लिए मलेशिया के साथ सहमति हुई.
	बायोडीजल	सितंबर 2015	व्यापार नीति	विश्व व्यापार संगठन से इस बात का आकलन करने के लिए एक विवाद निपटान पैनल का गठन करने के लिए अनुरोध किया कि क्या इंडोनेशिया से बायोडीजल के आयात पर यूरोपीय संघ डंपिंग रोधी शुल्क अंतरराष्ट्रीय व्यापार करारों के अनुरूप है.
	पॉम ऑयल	मई से सितंबर 2015	आयात कर	पॉम ऑयल उत्पादकों तथा उपभाक्ताओं के हितों को संरक्षित करने के लिए प्रयुक्त विसर्पी निर्यात कर व्यवस्था को जारी रखा; अप्रैल-सितंबर 2015 के दौरान शून्य निर्यात कर लागू किया गया.
	पॉम ऑयल	अपैल 2015	क्षेत्र विकास	पूर्वी मलेशिया में एक उच्च मूल्य पॉम ऑयल आधारित बायो-रिफाइनरी उद्योग की स्थापना को बढ़ावा देने के लिए निधियां आबंटित कीं.
मलेशिया	पॉम ऑयल	मई से सितंबर 2015	आयात कर	पॉम ऑयल उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं के हितों को संरक्षित करने के लिए प्रयुक्त विसर्पी निर्यात कर व्यस्थात को जारी रखा; अप्रैल-सितंबर 2015 के दौरान शून्य निर्यात कर लागू किया गया.
	पॉम ऑयल	जून 15	नवीकरणीय ऊर्जा नीति	परिवहन डीजल ईंधन में पॉम ऑयल आधारित डीजल की अनिवार्य मिश्रण दर को अक्तूबर 2015 से 7 प्रतिशत से बढ़ाकर 10 प्रतिशत किया.
	पॉम ऑयल	जुलाई 15	द्विपक्षीय व्यापार करार	तुर्की में मलेशियाई पॉम ऑयल निर्यात के लिए अधिमान्य पहुंच के लिए समझौता वार्ता की गई.
	पॉम ऑयल	अगस्त 15	द्विपक्षीय सहयोग	आपूर्ति प्रबंधन, उत्पाद छवि, फार्म आय तथा तकनीकी सहायता के संबंध में सामान्य, हितों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से पॉम ऑयल के क्षेत्र में नीतियों को समन्वित करने के लिए इंडोनेशिया के साथ सहमति हुई.
मेक्सिको	सोयाबीन	अप्रैल 2015	कृषि नीति	2012-2014 के दौरान पण्यों की कीमतों में गिरावट से प्रभावित किसानों को क्षतिपूर्ति करने के लिए सोयाबीन सहित चुनिंदा फसलों के लिए एक बार में ही पूरा समर्थन भुगतान मंजूर किया.
पेरू	बायोडीजल	जुलाई 2015	आयात नीति	अर्जेंटीना से बायोडीजल के आयात के बारे में स्थानीय एंटी-डंपिंग जांच-पड़ताल की शुरुआत की.
रूसी परिसंघ	सोयाबीन, सूरजमुखी, तुरिया	सितंबर 2015	व्यापार नीति	देश की डब्यूटीओ वचनबद्धताओं के अनुसार तिलहनों सहित कई उत्पादों पर निर्यात शुल्क कम किया.
संयुक्त अरब अमीरात	खाद्य तेल	जून 2015	पोषण नीति	खाद्य निर्माताओं को अगले तीन वर्षों में अपने उत्पादों से ट्रान्स फैटी ऐसिड हटाने का आदेश दिया.

स्रोत :एफएओ जनवरी 2016

प्रमुख समाचार

वैश्विक प्रसंस्कृत पोल्ट्री मांस बाजार 2020 तक 289.16 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य का हो सकता है

एलॉयड मार्केट रिसर्च द्वारा हाल ही में संकलित एवं प्रकाशित 'विश्व प्रसंस्कृत पोल्ट्री मांस बाजार – अवसर एवं पूर्वानुमान, 2014–2020' शीर्षक एक नई रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि वैश्विक प्रसंस्कृत पोल्ट्री मांस बाजार 2015–2020 की पूर्वानुमान अवधि के दौरान 6.4 प्रतिशत की सीएजीआर से वृद्धि करते हुए 2020 तक 289.16 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य का हो सकता है. वर्ष 2014 के दौरान चिकन पोल्ट्री मांस खंड का प्रसंस्कृत पोल्ट्री मांस बाजार में सबसे बड़ा हिस्सा रहा और पूर्वानुमान अवधि के दौरान इस प्रवृत्ति के बनी रहने की उम्मीद है. प्रसंस्कृत पोल्ट्री मांस की विश्व में भारी मांग है क्योकि यह अपेक्षाकृत सस्ते होते हैं और सूअर तथा गोमांस की तुलना में इनमें अधिक प्रोटीन तत्व होता है.

स्रोत : एफएनबी न्यूज.कॉम

कृषि क्षेत्र में आपदा जोखिम कम करने के लिए फिलीपीन्स सरकार और एफएओ ने ली ड्रोन की मदद

अपनी खाद्य सुरक्षा पर जलवायु परिवर्तन, बाढ़ तथा तूफान के नकारात्मक प्रभावों की समय पर सूचना प्राप्त करने और सटीक पूर्वानुमान करने के लिए फिलीपीन्स कृषि विभाग तथा यूएन के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने ड्रोनों का शुभारंभ किया है. ड्रोन इस बात का पता लगाएंगे कि इन परिस्थितियों में कृषि नुकसान सबसे अधिक कहां होगा और आपदा के घटित होने पर नुकसान का तात्कालिक जायजा भी लेंगे. कृषि क्षेत्र में आपदा जोखिम से निपटने के लिए इस आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने हेतु एफएओ तथा कृषि विभाग द्वारा एक संयुक्त अभियान के अंतर्गत हाल ही में ड्रोन लांच किए गए. ड्रोन का इस्तेमाल आपदा के घटित होने पर सरकार के सहायता प्रयासों तथा पूर्व चेतावनी प्रणालियों की तैयारी में प्रभावी मदद करेगा. इनके इस्तेमाल और सटीक भविष्यवाणी से किसान तथा मछुआरा समुदाय को काफी फायदा होगा.

स्रोत : एफएओ

2016 में अनाज की वैश्विक आपूर्ति की जोरदार संभावनाएं

2016 में वैश्विक अनाज उत्पादन 2521 मिलियन टन होने का अनुमान है जो पिछले वर्ष के भारी उत्पादन की तुलना में 0.2 प्रतिशत कम और रिकॉर्ड तीसरा उच्चतम वैश्विक कार्य–निष्पादन है. नए मौसम के लिए एफएओ के पहले पूर्वानुमान के अनुसार, एजेंसी के अद्यतन अनाज आपूर्ति एवं मांग संक्षिप्त नोट के अनुसार, भारी स्टॉक स्तर तथा अपेक्षाकृत मंद वैश्विक मांग का अर्थ यह है कि मुख्य खाद्यान्नों के लिए बाजार दशाएं कम से कम एक और मौसम के लिए स्थिर दिखाई दे रही हैं. एफएओ खाद्य मूल्य सूचकांक फरवरी की तुलना में मार्च महीने में 1.0 प्रतिशत बढ़ा क्योंकि चीनी की बढ़ती कीमतों से डेरी उत्पाद की कीमतों में गिरावट के समंजन की अपेक्षा पॉम ऑयल कोटेशनों में वृद्धि जारी रही.

स्रोत : एफएओ

यहाँ प्रकाशित समाचार और सूचनाएँ ऐसे विभिन्न स्रोतों से ली गई हैं, जो कि विश्वसनीय माने जाते हैं. हालाँकि प्रकाशित सामग्री की सत्यता और वस्तुनिष्ठता के विषय में हर संभव प्रयास किया गया है, फिर भी इनकी प्रामाणिकता और शुद्धता के संबंध में एक्ज़िम बैंक की कोई ज़िम्मेदारी नहीं होगी.

भारतीय निर्यात–आयात बैंक, केन्द्र एक भवन, 21वीं मंज़िल, विश्व व्यापार केन्द्र कॉम्प्लेक्स, कफ़ परेड, मुंबई – 400 005. फ़ोन : 2217 2600 फ़ैक्स : 2218 2572 ई–मेल : cag@eximbankindia.in
कृषि व्यापार समूह : agrigroup@eximbankindia.in/simaran.k@eximbankindia.in Website:www.eximbankindia.in

संपर्क नम्बर : अहमदाबाद: 26576852, बैंगलोर: 25585755, चंडीगढ़: 2641910/12, चेन्नै: 28522830, गुवाहाटी: 2237607, हैदराबाद: 23307816, कोलकाता: 22833419, नई दिल्ली: 23474800, पुणे: 26403000, अदिस अबाबा: (251116) 630079, दुबई: (9714) 3637462, जोहॉनिस्बर्ग: (2711) 3265103, लंदन: (4420) 77969040, सिंगापुर: (65) 653 26464, वॉशिंग्टन डी.सी.: (1202) 223–3238, यांगून : (95) 1389520